TDC-2nd (subsidiary)

आधुनिक परिवार की समस्याएँ
(Problems of modern family)

वर्तमान समय में परिवार का वह स्वरूप मौजूद नहीं है, जो आज से सौ साल पहले था। चाहे वह समाज विकसित समाज का या विकासशील समाज का, प्रत्येक समाज के परिवार के स्वरूप में कुछ-न-कुछ परिवर्तन अवश्य आया है। जैसे-जैसे आर्थिक विकास, उद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आ रही है, वैसे-वैसे परिवार के सामने नयी-नयी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। हिन्दू संयुक्त परिवार के बिखरने का यही प्रमुख कारण है। आधुनिक परिवार की कुछ समस्याएँ निम्नलिखित है:—

(1) तलाक की समस्या:—

दिन-प्रतिदिन समाज में तलाक की समस्या बढ़ती जा रही है। परम्परागत समाज में आधुनिक समाज की अपेक्षा तलाक की समस्या बहुत कम थी। भारत जैसे देश में तलाक की समस्या और भी कम थी। जब हम भारतीय जनगणना से प्राप्त वैवाहिक स्थिति के आँकड़ो को देखते है, तो स्पष्ट होता है कि भारत में तलाक की प्रक्रिया में तेजी आयी है। पहले साधारणतया तलाक निम्न जातियों तक ही सीमित था, पर आज समाज के हर हिस्सों में, विशेषकर शहरों में तलाक की घटनाएँ अधिक सुनने को मिलती है। अमेरिका में तलाक की समस्या कुछ और भी ज्यादा है।

(2) अस्थिरता की समस्या:—

सापेक्षिक रूप से आधुनिक परिवार

एक काफी अस्थिर व्यवस्था है। पहले की तुलना में परिवार निर्माण एवं परिवार विघटन की प्रक्रिया काफी तेज हो गयी है। परम्परागत भारतीय समाज में माँ - बाप के जीवन - काल मे उनके पुत्रों के बीच बँटवारा साधारणतया नहीं होता था, लेकिन इन दिनों भाई - भाई के बीच ही नहीं, बल्कि पिता - पुत्र के बीच भी परिवार का बँटवारा हो रहा है।

③ परिवार के मुखिया के प्रभुत्व में कमी। —

पहले परिवार का मुखिया या कर्ता अपने विवेक से परिवार संबधी निर्णयों को लिया करता था। परिवार का मुखिया परिवार का एकछत्र राजा होता था, उसी के राय - विचार से परिवार के सभी लोग विभिन्न कार्यों को करते थे। उसका आधिकार इतना केन्द्रित था कि कुछ समाजशास्त्रियों ने उसे परोपकारी तानाशाह कहकर पुकारा है। साधारणतया परिवार का मुखिया सबसे अधिक बुजुर्ग हुआ करता था। लेकिन आज बदलते परिवेश में परिवार के सभी सदस्य मिलकर निर्णय लेते है।

④ वैकल्पिक संस्थाओं का विकास। —

आधुनिक समाज में बहुत सारी ऐसी सँस्थाओं का उदय हुआ है जो परिवार के परम्परागत प्रकार्यो को पूरा करने की कोशिश करती है।
बच्चों का लालन - पालन सिर्फ परिवार में ही न होकर, अब परिवार के बाहर भी सम्भव है।

(5) परिवार के आकार में कमी। —
समय के साथ-साथ परिवार का आकार भी छोटा होता जा रहा है। भारत में संयुक्त परिवार का स्पष्ट विघटन देखने को मिलती है। इतना ही नहीं, विस्तृत परिवार भी टूटता जा रहा है। शहरों में तो विशेष अब मूल परिवार ही देखने को मिलता है बहुत से घरों में तो आज मात्र एक पुरुष ही रहता है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के चलते आधुनिक समाज में मूल परिवार एवं घरबार की प्रधानता बढ़ती जा रही है।

(6) व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना की वृद्धि। —
पहले परिवार के सभी सदस्य अक्सर एक-दूसरे की भलाई की बात सोचते थे। सदस्यों के बीच सहयोग, सहानुभूति और परस्पर प्रेम की भावना अधिक होती थी, लेकिन आज लोग कुछ ज्यादा ही स्वार्थी हो गए हैं। लोग अपने स्वार्थ की बात ज्यादा और परिवार के स्वार्थ की बात कम सोचते हैं। यही कारण है कि परिवार में छोटे-छोटे तनाव बढ़ता जा रहा है। लोग अपने सदस्यों से अलग होकर स्वतन्त्र परिवार स्थापित करने लगे हैं। वर्तमान समय में नातेदारी बन्धन ढीला पड़ता जा रहा है।

(7) विवाह प्रथा प्रचलन में कमी। —
पाश्चात्य देशों में यह देखने को मिलता है कि लोग बिना विवाह किए पति-पत्नियों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं।